हिन्दी कथा साहित्य में किन्नर विमर्श

भारत में थर्ड जेंडर, तृतीय लिंग, ट्रांसजेंडर, किन्नर आदि नामों से पहचाना जाने वाला समुदाय बहुत ज्यादा उपेक्षित रहा है। सालों से इन्हें अपमान और प्रताड़ना झेलनी पड़ी है। धार्मिक दृष्टि से देखे तो भारत में किन्नरों को पवित्र और ऊंचा स्थान दिया गया है। लेकिन प्रत्यक्ष व्यवहार में किन्नरों को अत्यंत है यह दृष्टि से देखा जाता है। वास्तव में वे न्यूनतम मानवाधिकारों से भी वे वंचित हैं।

किन्नर कौन है? - सेक्स/ लिंग तीन है एक पुरुष, दूसरा स्त्री और तीसरा जिनके सेक्स अंगों का सही विकास नहीं हो पाया। हम ये तीन सेक्स मानते हैं परंतु सेक्सुअलिटी कई प्रकार की होती है। किसी को होमो-सेक्सुअलिटी पसंद आती है। कोई विषम लैंगिक हो सकता है, कोई ट्रांसजेंडर के साथ सेक्स करना पसंद करता है, तो कुछ लोग ऐसे होते हैं जो स्त्री पुरुष दोनों के साथ समान रूप से सेक्सुअल संबंध बना सकते हैं और भी इसके प्रकृति प्रदत्त अवस्थाएँ हो सकती है।

हिंदी साहित्य में किन्नरों को लेकर गंभीर चिंतन शुरू हुआ है। नीरज माधव ने अपने ' यमदीप' उपन्यास में किन्नर समुदाय के अंतरंग जीवन की व्यथा को उजागर किया है। यदि उपन्यास की नायिका नंदरानी बचपन में ही किन्नर होने का आभास कराती है। पढ़ाई में तेज है। माता-पिता की इच्छा है उसे पढ़ा लिखा कर काबिल बनाएंगे उसे आत्मनिर्भर बनाएंगे। " कक्षा आठ में पहुंचते-पहुंचते उसके अन्य स्त्रियोंचित अंगों के उभार और विकास के साथ ही चेहरे पर श्याम वर्ण रोएं भी उभरने लगे थे।" ...१ यह देखकर माता-पिता के सपने चकनाचूर हो गए। वे अत्यंत चिंतित हो गए । नंदरानी भी व्यथित हुई। बड़ी बहन नंदिनी दीदी के विवाह पर इसका असर हो सकता है इसलिए वह किन्नरों की बस्ती में जाने का मन बना लेती है लेकिन माँ इसके लिए तैयार नहीं होती। एक दिन रात सोते हुए परिवार को त्याग कर वह किन्नरों की बस्ती में चली जाती। वहां पर दीक्षा गुरु उसका नाम बदल कर' नाजबीबी' रखते है। यहां से नंदरानी के जीवन का नया अध्याय शुरू होता है। पर घर के दरवाजे उसके लिए सदा के लिए बंद हो जाते हैं। एक दिन घर की याद आती है इसलिए नाजबीबी घर फोन करती है तब उसका भाई उसे सख्त हिदायत देता है कि तुम्हारा इस परिवार से कोई लेना-देना नहीं है। वह दुखी हो जाती है। हिजड़े को घर में रखना समाज को मान्य नहीं था। किन्नरों का अभिभावक होना भी समाज को मान्य नहीं नहीं था। नाजबीबी बेबसी में अपना जीवन जीती है पर वह राष्ट्रभक्त भी थी। वह साफ-साफ जता देती है कि भले ही समाज किन्नरों से किनारा करता हो लेकिन जब भी अवसर आया उन्होंने समाज और देश-हित में अपने को झोंक दिया। उसका व्यंग्यपरक आक्रोश फूट पड़ता है - " सबक लेना है तो हम हिजड़ों से सबक लें। न हम लोग गद्दार है न हीं हम लोग गद्दारी करेंगे। आपस में हम लोग प्रेम से रहते हैं और हम लोग किसी से नफरत क्यों करें? हम लोग इंसान थोड़े ही है की आपस में नफरत करेंगे।" ...२

इस प्रकार किन्नर समाज के बाहय व आंतरिक जीवन का वास्तविक चित्रण इस उपन्यास में हुआ है। 'मैं भी औरत हूं' अनुसया त्यागी के उपन्यास में किन्नर जीवन की अनछुई समस्या का चित्रण हुआ है। रोशनी और मंजुला दोनों बहने किन्नर है परंतु उनके माता-पिता को इसका पता ही चलता। दोनों बहनों को जब रजोधर्म शुरू नहीं होता तो डॉक्टर बताते हैं दोनों बच्चीयों के जननांग अपरिपक्व है। डॉक्टर के परामर्श पर दोनों बहनों के ऑपरेशन और प्लास्टिक सर्जरी की जाती है। मंजुला का विवाह डॉ. विपिन से हो जाता है और उसका बच्चा भी होता है। लेकिन रोशनी में गर्भाशय और योनी अनुपस्थित थी। रोशनी अपनी कमियों को स्वीकारती हुई अध्ययन में अपना ध्यान केंद्रित करती है। आई. आई. टी. दिल्ली कॉलेज में सफल होकर एक नामी कंपनी में सी.ई.ओ. बन जाती है। उसी कंपनी में काम कर रहे हैं ओंकार पटेल उससे प्रभावित होकर शादी का प्रस्ताव रखता है। रोशनी उसे वास्तविक परिस्थिति से अवगत कराती है। ओंकार सच्चा प्रेमी है वह कहता है - " रोशनी यह नियति ने तुम्हारे साथ क्रूर मजाक किया है। पर फिर भी भगवान को धन्यवाद दो कि उन्होंने तुम्हें अच्छा दिमाग, इतना सुंदर चेहरा, व इतना सुंदर दिल दिया है। अरे ! क्या हुआ जो उसने तुम्हें गर्भाशय नहीं दिया। हम उस समस्या को आसानी से हल कर सकते हैं फिर तुम जो कहोगी, मैं करने को तैयार हूं । " ...३ वे सोरोगेटेड मदर के माध्यम से 'इला सावंत' का चयन करते हैं जो प्रसव पूर्व उनसे पैसे लेकर भाग जाती है। इस धोखे के बाद भी वे निराश नहीं होते। अनाथालय से एक कन्या को गोद लेकर संतुष्ट होते हैं। वे दोनों उसका नाम तेजस्विनी रखते हैं। उसे अच्छे से पढ़ा लिखा कर आई.आई.टी. दिल्ली में एडमिशन कराते हैं। वहां उसका परिचय मयंक सावंत

नामक गरीब लड़के से होता है। आगे चलकर दोनों सुखी दांपत्य जीवन व्यतीत करते हैं। बीच में रहस्य उद्घाटन होता है कि मयंक इला सावंत का बेटा है।

इस उपन्यास में यह संदेश चित्रित किया है कि आधुनिक चिकित्सा पद्धति से हिजड़ापन दूर किया जा सकता है। ऐसे अनेक हिजड़े आज भी ऑपरेशन के अभाव में सामान्य जीवन से दूर है। अधिकतर अंधविश्वासी, और शिक्षित समाज किन्नर संतान को स्वीकार नहीं करते उन्हें हिजड़ों के हाथों सौंप देते हैं, या फिर उन्हें मार देते है। इस क्रूरता पर इस उपन्यास में करारी चोट की है।

प्रदीप सौरभ द्वारा लिखित 'तीसरी ताली' उपन्यास किन्नरों के अकेलेपन और समाज में इस समुदाय के प्रति अलगाव का भाव अभिव्यक्त करता है। उपन्यास के शीर्षक से स्पष्ट होता है कि तीसरी ताली उसी वर्ग की ताली हो सकती है, जिन्हें जिंदगी में कभी तालियां ना मिली हो। इसमें चित्रित है विनीत से विनिता बनने की त्रासदी। घर से पिंड छुड़ा कर अनेक संघर्षों को पार करती हुई विनिता ब्यूटी पार्लर के व्यवसाय में सफल होती है। गे- वर्ल्ड की ब्यूटी क्वीन बनी वनिता चिकित्सा पद्धति से वेजाइना रिप्लांटेशन के द्वारा पूर्ण औरत की अस्मिता और अस्तित्व प्राप्त कर लेती है।

;तीसरी ताली' प्रतीकात्मक ढंग से किन्नर की पहचान को अनावृत करता है क्योंकि सालों की लय पर नाच-गाकर संतान पैदा करने में अक्षम ये लोग दूसरों के बच्चे के जन्म पर बधाई देते हुए आशीर्वाद देते हैं। दूसरों के यहां शुभ और मंगलदाता बनकर आते हैं लेकिन अपने घर और समाज के लिए और शुभ और अमंगलकारी है। सच में कैसी विडम्बना है यह?

'पोस्ट बॉक्स नंबर 203 नालासोपारा' चित्रा मुद्गल द्वारा लिखित किन्नरों के जीवन संघर्षों को चित्रित करने वाला महत्वपूर्ण उपन्यास है। जब कथाकार मुंबई के नालासोपारा में रहती थी तब विनोद नामक किन्नर से उनकी भेंट हुई। घर परिवार की बेदखली के बाद यातना व क्रूरता का दंश झेलते हुए उसने अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष का जो पथ चुना उसे सूक्ष्मता से देखा और लेखिका ने किन्नर के जीवन की दयनीय दशा को अपने उपन्यास में चित्रित किया।

इस उपन्यास का केंद्रीय पात्र विनोद उर्फ बिन्नी उर्फ बिसली का जन्म सामान्य परिवार में होता है और उसका बचपन भी सामान्य बालक की तरह व्यतीत होता है। लिंग दोष का आभास होते ही उसका विद्यालय जाना बंद हो जाता है जब कि खेल कूद और पढ़ाई में वह अव्वल आता है। परिवार के इस कठोर निर्णय से आहत होकर वह इसका कारण जानना चाहता है परंतु परिवार के पास उसका कोई तार्किक जवाब नहीं है । वस्तुतः रूढ़िवादी समाज किन्नर को बोझ ही नहीं समझता , हेय दृष्टि से भी देखता है। चाहे वह अपना ही बालक क्यों न हो? विनोद किन्नर बस्ती में रहने के लिए विवश है परंतु वह वहाँ रहकर भी सामान्य मनुष्य की तरह जीना चाहता है परंतु वहां उसे किन्नर की तरह रहने, उठने-बैठने, पहनने-सवरने, बोलने-बताने का प्रशिक्षण मिलता है जो विनोद को स्वीकार नहीं था। विनोद शिक्षा के महत्व को जानता है। वह आत्मनिर्भर होने के लिए गाड़ियां धोता है और कंप्यूटर चलाने में सिद्धहस्त हो जाता है। विनोद समझाता है कि लिंगदोषी संतानोत्पत्ति नहीं कर सकते लेकिन अपनी प्रतिभा क्षमता को विकसित करके उन्हें बुद्धि का प्रश्रय देकर मान्य मुकाम तो पा सकता है - " किन्नरों को धड़ के नीचे लिंग ना सही धड के ऊपर मस्तिष्क भी नहीं यह कैसे सोच लिया। "... ४ अंत में विनोद की मां अपना माफीनामा अखबार में प्रसिद्ध कर उसे घर वापसी का निवेदन करती है।

किन्नरों के जीवन पर और भी कई उपन्यास लिखे गए है । गुलाम मंडी, मैं पायल, जिंदगी फिफ्टी फिफ्टी, अस्तित्व, आधा आदमी, मैं क्यों नहीं इत्यादि उपन्यासों में किन्नरों के जीवन की वेदना को वाणी दी है।

कहानियों में किन्नर विमर्श : –

महेंद्र भीष्म की 'त्रासदी' कहानी अशरीरी और प्लेटोनिक प्रेम को लेकर लिखी गई है परंतु समाज विपरीत लिंगी और समलिंगी प्रेम को ही कभी मान्यता नहीं देता तो फिर इस तृतीय लिंग के प्रति प्रेम और आकर्षण को स्वीकारना बहुत दूर की बात है। कहानी के केंद्र में है रती नामक स्त्री जो सुंदरी नामक किन्नर से प्रेम करने लगती है। वैसे रति की दो बेटियां और एक बेटा है। अपनी सभी जिम्मेदारियों को भी बखूबी से निभाती है परंतु सुंदरी के साथ मां का बढ़ता संबंध बेटे को खलने लगता है। एक दिन मां और सुंदरी को साथ हँसते देख उसका मन क्रोध से

भर उठता है। वह सुंदरी को उठाकर पटरियों पर फेंक देता है। रति भी उसके प्रेम में रेल के सामने आत्म समर्पण कर देती है। इस प्रकार एक प्रेम कथा का अंत हो जाता है।

कथाकार शिव प्रसाद सिन्हा की 'बिंदा महाराज' कहानी अनन्य साधारण है। कहानी के मुख्य पात्र बिंदा महाराज है। खुद को वे बिंदिया कहलाना पसंद करते हैं। इस चरित्र प्रधान कहानी में बिंदा महाराज के स्वाभाविक गुणों-अवगुणों के मध्य, दबी इच्छाओं, आकांक्षाओं को पिरोया गया है। हर व्यक्ति के भीतर प्रेम का स्त्रोत होता है। जिसकी तृप्ति आवश्यक है और चूँकि बिंदा महाराज न तो पुरुष है न हीं स्त्री। इसलिए ना तो वह किसी पुरुष से प्रेम पा सकते हैं और न ही उन्हें किसी स्त्री का प्रेम पाने का अधिकार है। इसलिए उनके प्रेम का स्त्रोत अबोध बच्चों के लिए उमड़ता है। उनके भीतर की ममता जागती है- दीपू मिसिर के दो ढाई वर्ष बेटे के लिए। परंतु इसका परिणाम निराशाजनक मिलता है। जब उस अबोध बालक की मृत्यु होती है तब उसका दोष बिंदा महाराज के सर पर डालकर उन्हें डायन के नई पदवी से विभूषित कर दिया जाता है। यही किन्नरों के जीवन की त्रासदी और हमारे समाज की मानसिकता है।

किरण सिंह की 'संझा' कहानी एक लंबी कहानी है। इस कहानी का मुख्य पात्र 'संझा' है जो जन्मजात हिजड़ा है। यह कहानी हिजड़ों की यातना को बहुत ही मनोवैज्ञानिक ढंग से व्यक्त करती है। संझा का जन्म न स्त्री के रूप में होता है न हीं पुरुष के रूप में। वह तो दोनों के मध्य में है। इसी कारण उसका नाम 'संझा' रखा जाता है। पिता वैद्य जग हंसाई के डर से संध्या का सच छुपाते हैं और उसे बालिका के रूप में लाड-प्यार से पाल-पोसकर बड़ा करते हैं लेकिन संझा कि शारीरिक और मानसिक बदलों से उसके सामने कई सवाल खड़े होते हैं। वह अन्य बच्चों की तरह सामान्य जीवन जीना चाहती हैं । वह नदी में रहना चाहती है, पगडंडियों पर दौड़ना चाहती है। पिताजी उसकी तडफ देखकर उसे समझाते हैं लेकिन एक दिन सत्य समाज के सामने उजागर हो ही जाता है। तब समाज का दोहरा, विकृत चेहरा सामने आता है। जो समाज उसे एक स्त्री मानकर प्रेम करता था वही समाज अब उसका दुश्मन बन जाता है।

इसी प्रकार कुसुम अंसल की कहानी ' ई मुर्दन का गांव' एक गंभीर प्रश्न की ओर संकेत करती हैं। यह प्रश्न आज भी निरुत्तरित है इस कहानी की पात्र जया गुरु स कहती है- " जन्म तो किसी के बस की बात नहींन है, पर ठीक से जीने का हक तो सबको है। पुराने जमाने में हमारे जैसे लोग 'ख्वाजा सरा' कहलाते थे। और बादशाहाओं के महलों और हवेलियों में रहते थे। मंदिर-मस्जिद की पहरेदारियाँ, जनानखाने की रखवाली हमारा काम था।" ... ५ और आज स्थिति यह है कि " हमारी समाज में न कोई जगह है न पहचान ... हम सब अछूत से भी नीच समझे जाते है।" ... ६ ' यही विडंबना है जो कहानी का बलदेव पहले बीलू बनता है बाद में बिली वर्मा बन जाता है। बीलू उनके मुक्ति का मार्ग प्रस्तुत करता है। पाश्चात्य देशों में स्वतंत्र विचार व खुली मानसिकता के कारण किन्नर बच्चे सामान्य जीवन व्यतीत करते हैं। बीलू पेरिस में रहकर कपड़े डिजाइन करने में महारत हासिल करता है और सामान्य जीवन जीता है।

चांद दीपिका की कहानी 'खुश रहो क्लीनिक' का नायक डॉ ऋषि किन्नर सशक्तिकरण का नया मार्ग प्रस्तुत करता है। ऋषि किन्नर के रूप में जन्म लेता है। पढ़ने में होशियार होने के कारण पढ़ लिखकर डॉक्टर बन जाता है। उसे पढ़ाने लिखाने की व्यवस्था डेरे के गुरु करते हैं। बचपन में उसके पिता ने उसे परिवार से अलग कर दिया था। संयोग से डॉक्टर बनने के बाद पिता से उसकी भेंट भी होती है। शिक्षा सशक्तिकरण का सबसे बड़ा माध्यम है जिससे समाज की मुख्यधारा में उन्हें स्थान प्राप्त हो सकता है।

इसके अलावा किन्नरों के जीवन पर अनेक कहानियां लिखी गई है। सलाम बिन रजाक की ' बीच के लोग ' में भारतीय शासन व्यवस्था के नकारापन पर चोट की है। डॉ लवलेस दत्त की कहानी नेग में किन्नरों की एक स्वाभाविक प्रवृत्ति को आधार बनाया है। रामस्वरूप अणखी की कहानी उसका बाप' हिजड़ा जीवन की विडंबना को प्रस्तुत करती है। बीना वर्मा की कहानी 'सती प्रेम' की कथावस्तु भी हिजडों के जीवन पर आधारित है। जसवीर राणा की कहानी' घुंगरू' कथा का मुख्य विषय हिजड़ों की मानसिकता ही है।

आत्मकथा –

अपनी जुबानी स्वतः की कहानी लिखने की आधुनिक विधा आत्मकथा है। किन्नर विमर्श आंदोलन ने तब जोर पकड़ा जब स्वतः किन्नर ने अपने भोगे हुए यथार्थ को वाणी दी। " मैं हिजड़ा.... मैं लक्ष्मी" शीर्षक आत्मकथा लिखने वाले स्वतः किन्नर लक्ष्मी नारायण त्रिपाठी है। इस ग्रंथ में लक्ष्मी के बचपन से लेकर उसके संघर्ष और उत्कर्ष के शिखर को स्पर्श करने तक के सफर का मनोवैज्ञानिक निरूपण प्राप्त होता है। लक्ष्मी ने किए हुए संघर्ष

के कारण अन्य किन्नरों को लाभ हुआ हुआ है। उन्हें आज अनेक प्रकार के शासकीय सुविधाएं एवं मानवीय अधिकार प्राप्त हुए हैं।

दूसरी आत्मकथा मानोबी बंदोपाध्याय ने लिखी। " पुरुष तन में फंसा मेरा नारी मन " यह आत्मकथा मानव हृदय के जीवन के शून्य से क्षितिज तक पहुंचने की संघर्ष गाथा है। अति सामान्य परिवार में जन्म लेकर मानोबी महाविद्यालय के प्राचार्य पद पर आसीन होकर एक नया इतिहास रचती है।

उपर्युक्त विवेचन के बाद कहा जा सकता है कि आज तृतीय लिंगियों की स्थिति चिंताजनक है। हमारे समाज का यह दायित्व बनता है कि जो हमसे थोड़े अलग हैं उन्हें स्वीकार करें और अपनी मानसिकता बदलें।

संदर्भ **-**

१] डॉ. विनयकुमार पाठक, किन्नर विमर्श दशा और दिशा, भावना प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण २०१९ पृष्ठ- ६१
२] डॉ. विनयकुमार पाठक, किन्नर विमर्श दशा और दिशा, भावना प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण २०१९ पृष्ठ- ६४
३] वहीं - ६८
४] वहीं - 9९८
५] डॉ. एम. फिरोज खान, थर्ड जेंडर : कथा आलोचना अनुसंधान पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीबूटर्स कानपुर, संस्कारण २०१७ पृष्ठ - १५०
६] वहीं पृष्ठ - १५०
७] डॉ. इकरार अहमद, किन्नर विमर्श साहित्य के आईने में , वांगमय बुक्स अलीगढ़, संस्करण २०१७ पृष्ठ - ८२